Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : श्रम बाजार की धारणा (Concept of Labour Market)

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

श्रम बाजार की धारणा (Concept of Labour Market)

सैद्धान्तिक धारणा के अनुसार, "श्रम बाजार वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक विशेष प्रकार के श्रम की पूर्ति तथा उसी प्रकार के श्रम की माँग सन्तुलित होती है अथवा सन्तुलित होने की कोशिश करती है।" श्रम बाजार वह स्थान या क्षेत्र होता है जहाँ पर यह प्रक्रिया सम्पादित की जाती है।'

मोटे तौर पर श्रम बाजार का अर्थ उस स्थान या क्षेत्र से भी लगाया जाता है जहाँ विभिन्न प्रकार के कारखानों, उद्योगों, व्यवसायों आदि के लिए सापेक्षिक मजदूरी स्तर निर्धारित होती है।\

एक अन्य धारणा के अनुसार, "श्रम बाजार से आशय एक निर्माणी तथा व्यावसायिक केन्द्र से है जिसमें प्रत्यक्ष रूप से इसका सहायक कृषि क्षेत्र भी सम्मिलित रहता है।"

संयुक्त राज्य के रोजगार सेवा संगठन के अनुसार, "श्रम का बाजार वह स्थान है जिसके अन्दर रोजगार की क्रियाओं को प्रभावित करने वाली शक्तियाँ कार्य करती हैं। इस स्थान से उद्योगपति अपने कर्मचारियों की भर्ती करते हैं और कर्मचारी काम तलाशते हैं। यह एक सामान्य क्षेत्र है जिसमें श्रम की माँग, पूर्ति, मजदूरी के अन्तर, काम के घण्टों के परिवर्तन, भर्ती और कार्य की दशा, उद्योगपति और श्रमिक के सम्बन्धों का निर्माण होता है। "

'श्रम के बाजार' शब्द का कुछ लोग विरोध करते हैं, क्योंकि इस शब्द में यह ध्वनि निकलती है कि श्रम भी एक वस्तु है। डेल योडर ने इन आपत्तियों का उत्तर दिया है, "इस प्रकार की आपत्तियाँ बौद्धिक क्षमता की अपेक्षा भावुकता और राजनैतिक पक्षपात को ही प्रमाण्ति करती हैं। सच बात तो यह है कि श्रम का क्रय-विक्रय होता है। अत: उसका एक बाजार होता है। उसके क्रय-विक्रय की विधियों का अध्ययन श्रम की समस्याओं के सुलझाने में मूल्यावान सहायता दे सकता है। " ' श्रम के बाजार' शब्द का प्रयोग द्वितीय महायुद्ध में बहुत प्रचलित हुआ। आजकल यह शब्द सामान्य हो गया है।

श्रम बाजार की प्रमुख विशेषताएँ (Main Characteristics of Labour Market) यद्यपि एक साधारण रूप में श्रम बाजार की समस्याएँ किसी वस्तु या बाजार की समस्याओं की तरह मालूम होती हैं, क्योंकि दोनों का अध्ययन पूर्ति, माँग, कीमत साम्य (Equilibrium) आदि विचारों के ही सम्बन्ध में ही किया जाता है, फिर भी श्रम बाजार और किसी वस्तु के बाजार में कुछ महत्वपूर्ण तत्व होता है, जिससे श्रम बाजार के विश्लेषण में कुछ संशोधनों की जरूरत होती है। श्रम बाजार की जिन विशेषताओं में यह अन्तर पाए जाते हैं, वे इस प्रकार हैं-

(1) गतिशीलता की कमी (Lack of Mobility) -

(2) क्रेता एकाधिकार (Monospony) - क्रेता

(3) कमजोर सौदा शक्ति (Weak Bargaining Powers) -

(4) एकाधिकारी तत्व का अभाव (Lack of Monopoly Element) -

(5) क्रेता व विक्रेता के बीच सम्बन्ध व्यक्तिगत नहीं होते (Relationship between Buyer and Seller is not impersonal) -

(6) अपूर्ण बाजार (Impertant Market)-

श्रम बाजार का वर्गीकरण (CLASSIFICATION OF LABOUR MARKET)

श्रम के बाजार का वर्गीकरण सामान्यतः निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है-

(1) सैद्धान्तिक वर्गीकरण (Theoretical Classification),

(ii) व्यावहारिक वर्गीकरण (Empirical Classification)।

(1) सैद्धान्तिक वर्गीकरण (Theoretical Classification)

श्रम अर्थशास्त्र के सिद्धान्त की विवेचना के लिए श्रम के बाजार को निम्नलिखित दो भागों में बाँटा जाता है-

(i) संगठित श्रम बाजार (Organised Labour Market) - श्रम श्रमिक संगठित होकर काम करते हैं, तो उस समय श्रम के मूल्य अर्थात् उनकी मजदूरी का निर्धारण स्वतन्त्र प्रतियोगिता के द्वारा नहीं होता है, क्योंकि श्रम की माँग और पूर्ति आदि पर श्रम के संगठनों का प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण इसका पृथक् से अध्ययन आवश्यक हो जाता है। यही कारण है कि मजदूरी का आधुनिकतम सिद्धान्त संगठित श्रम के बाजार का भी मजदूरी के निर्धारण का अध्ययन करता है।

(ii) असंगठित श्रम बाजार (Unorganised Labour Market) - ऐसा श्रम स्वतन्त्र बाजार जिसमें मजदूर संगठित होकर कार्य नहीं करते हैं और उनकी मजदूरी का निर्धारण स्वतन्त्र रूप से माँग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है। आधुनिक जीवन में उद्योगों में अधिकांशतः श्रमिक संगठित होते हैं, इसलिए असंगठित श्रम बाजार की परिस्थितियाँ कम ही पायी जाती हैं। परन्तु अभी भी कुटीर व लघु उद्योगों, निर्माण उद्योगों तथा कृषि आदि में श्रम असंगठित है। जब श्रम बाजार असंगठित होता है तो आर्थिक शक्तियाँ दूसरे प्रकार से कार्य करती हैं। श्रम सिद्धान्तों की विवेचना के दृष्टिकोण से असंगठित श्रम बाजारी अधिक उपयोगी होते हैं।

(II) व्यावहारिक वर्गीकरण (Empirical Classification)

श्रम के बाजार का व्यावहारिक वर्गीकरण सामान्यतः श्रम और उद्योगों के आधार पर किया जाता है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से श्रम बाजार के निम्नलिखित वर्गीकरण हो सकते हैं-

(i) औद्योगिक श्रम का बाजार (Industrial Labour Market) - इस वर्गीकरण में कारखानों में कार्यरत श्रमिकों के श्रम का क्रय-विक्रय किया जाता है।

(ii) कृषि श्रम बाजार (Agricultural Labour Market) - कृषि में लगे हुए श्रमिकों का क्रय-विक्रय जिस क्षेत्र में होता है उसे कृषि श्रम बाजार कहते हैं।

(iii) धवल वस्त्र श्रम बाजार (White Colour Labour Market) - जिस बाजार में पढ़े-लिखे लोगों का क्रय-विक्रय होता है उसे धवल वस्त्र श्रम बाजार कहते हैं।

(iv) कुशल तथा प्रशिक्षित श्रम बाजार (Skilled and Trained Labour Market) - जिस श्रम बाजार में कुशल श्रमिकों और कारीगरों का विपणन किया जाता है उसे कुशल तथा प्रशिक्षित श्रम बाजार कहते हैं।

(v) अकुशल श्रम बाजार (Unskilled Labour Market) - जैसा नाम से स्पष्ट है, इस बाजार के अन्तर्गत किसी भी प्रकार के अशिक्षित और अकुशल श्रमिकों का क्रय-विक्रय किया जाता है।

संयुक्त राज्य के रोजगार विभाग (United States Employment Service) ने श्रम के बाजार का विभाजन दूसरी दृष्टि से किया है-

1. श्रम का औद्योगिक बाजार (Industrial Market),
2. श्रम का व्यावसायिक बाजार (Occupational Market) तथा
3. श्रम का भौगोलिक बाजार (Geographical Market)।

इस संस्था द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में कहा गया है-

"श्रम के बाजार को तीन विस्तृत वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- औद्योगिक, व्यावसायिक तथा भौगोलिक। चूँकि रोजगार के अवसर बहुधा विशेष प्रकार के व्यवसायों और औद्योगिक कार्यों में सीमित रहते हैं, अतः सामान्यतः एक भौगोलिक क्षेत्र में अनेकों प्रकार के परस्पर सम्बन्धित व्यावसायिक और औद्योगिक बाजार होते हैं।""